Subject- Maithili (IInd Semester)

Paper code- CC-6, MTL-522

Topic – Ankiya Naatak Visheshata Evam Naatakaar

Format- PDF

Name/contact- Dr. Sudhir Kumar Jha
Department of Maithili
Patna University
Mobile - 9661819662
Email- drsudhirkrjha1170@gmail.com

Scanned with CamScanner

अंकिया नाटक विशेषता एवं नाटकार

मध्यकालीन मैथिली नाट्य साहित्य तीन क्षेत्र मे प्रसारित छल। पहिल मिथिला, दोसर नेपाल आ तेसर आसाम। मध्यकाल मे आसाम मध्य जे मैथिली नाटकक रचना होइत छल, से 'अंकिया नाट' नामे चर्चित भेल। अंकिया नाटक मुख्य नाटकार मे शंकरदेव, माधवदेव आ गोपालदेवक नाम उल्लेखनीय अछि। अंकिया नाट सभक प्रथम संग्रह आसाम सरकार द्वारा श्री बिरिंचि कुमार 'बरुआ'क सम्पादकत्व मे 'अंकिया नाट' शीर्षक सँ प्रकाशित भेल अछि। एहि संग्रह मे उपर्युक्त तीनू नाटकारक नाट संगृहीत छन्हि जे निम्न रूपेँ अछि :

1. कालियदमन नाट 2. रामविजय नाट 3. रुक्मिणीहरण नाट 4. केलिगोपाल नाट 5. पारिजातहरण नाट 6. पत्नीप्रसाद नाट 7. भोजनव्यवहार नाट 8. भूमिलेटोवा नाट 9. अर्जुनभञ्जन नाट 10. पिम्परागुचोवा नाट 11. रासझुमुरा नाट 12. चोरधरा नाट 13. कोटोराखेलोवा नाट 14. भूषणहेरोवा नाट 15. जन्मयात्रा नाट

1. कालियदमन नाट -

एहि नाटक आधिकारिक कथावस्तु श्रीमद्भागवत मे वर्णित श्रीकृष्ण द्वारा कालिय नागक दमन अछि। एकर रचना शंकरदेव अपन भाए रामरायक अनुरोध पर कयलन्हि। एहि मे कृष्ण द्वारा कालिय नागक दमनक कथा विस्तृत रूपेँ वर्णित अछि। कालिय नाग श्रीकृष्णक आगाँ विकल भए स्तुति करैत अछि —

जय जय जगत महेश्वर।
ब्रह्मा शंकर याहे किंकर॥
जय भकतक भयहारी।
नमो हरि चरण तोहारि॥
तव पावे अत साधि।
मजि पापी अपराधी॥
दंशल देव ना जानि।
मरय दोष आपनि॥[1]

नाटक अन्त मे श्रीकृष्ण द्वारा वनाग्निपान कथा सेहो वर्णित अछि। तैं ने सूत्रधार कहैत अछि —

ओहि गोपालक कालियदमन वनाग्निपान लीला यात्राये सब लोके शुने, भने, ताहेक कृष्ण चरणे परम भकति बढ़य।[2]

2. रामविजय नाट -

शंकरदेवक एहि नाटक विषयवस्तु सीता-स्वयंवर कथा पर

Scanned with CamScanner

आधारित अछि। एहि मे राजा जनक द्वारा स्वयंवरक आयोजन, राम आ लक्ष्मण संग विश्वामित्रक स्वयंवर-स्थल पर आगमन, स्वयंवर मे सभ राजाक असफल भेला पर विश्वामित्रक आज्ञा पाबि श्रीरामक धनुष तोड़ब, सीता द्वारा राम कें जयमाल पहिराएब एवं श्रीराम-परशुरामक संवाद बड़ रोचक ढंग सँ उपस्थित कएल गेल अछि। स्वयंवर मे उपस्थित राजा लोकनिक समक्ष महाराज जनक अपन मन्तव्य स्पष्ट करैत कहैत छथि—

आहे राजा सब हामु सत्यवाणी कहैत छी ता सुनह सीताक विवाह निमित्त चिन्तिते ओहि महेशेक धनु गगन हस्ते पड़ल। तदन्तरे आकाशवाणी शुनलो- ओहि धनुत ये गुण दिते पारय ताहेक माथे कुसुममाला दिये सीता स्वामी वरब। इहा सत्य जानि यत्न करह।[3]

रामविजय नाट मे रामक द्वय विजय देखाओल गेल अछि पहिल सीता-स्वयंवर मे धनुष-भञ्जन कए विजयी होइत छथि आ दोसर विजय परशुरामक तेज कें निस्तेज करबा मे निहित अछि। परशुराम धनुषभंगक शब्द सुनि अत्यन्त क्रोधित भए स्वयंवर-स्थल पर पहुँचैत छथि परञ्च रामक पराक्रम सँ निस्तेज भए जाइत छथि एवं राम, सीता कें लए अयोध्या विदा होइत छथि। एहि नाट मे सीता आ रामक शारीरिक सौन्दर्यक वर्णन विद्यापति शैली मे बड़ नीक जकाँ भेल अछि। एहि प्रसंग डॉ. लेखनाथ मिश्र अपन शोध-प्रबन्ध मे लिखैत छथि—

यद्यपि अंकिया नाट सभ मे कोनो तरहें रूपक साहित्यिक चमत्कारक समावेश नहि भेल अछि तथापि एहि रामविजय मे सीता आ रामक शरीर सौन्दर्यक वर्णन मे कवि अवश्ये विद्यापतिक नखशिख वर्णन सँ प्रभावित छथि।[4]

द्रष्टव्य अछि रामक सौन्दर्य-वर्णन

सुन सखी वचन स्वरूप। कि कहब रामक रूप॥
श्याम मुरुति पीत वास। घने येचे बिजुरि विकाश॥
मस्तक छत्रक वेश। नील आंकुचित केश॥
रुचिकर कर्ण अतूल। नासा नील तिल फूल॥[5]

डॉ. जयकान्त मिश्रक विचारें,

रामविजयक नाम खूब उपयुक्त नहि लगैत अछि कारण जे एहि मे ने रामक विजय वर्णित अछि आ ने राम द्वारा रावणक विजय प्रत्युत एहि मे अछि सीता- स्वयंवरक कथा मात्र।[6]

3. रुक्मिणीहरण नाट —

प्रस्तुत नाटक कथावस्तु महाभारत सँ लेल गेल अछि। एकर कथानक एना अछि – 'सुरभि' नामक एकटा भाट भिक्षुकक मुँहे रुक्मिणीक सौन्दर्यक वर्णन सुनि श्रीकृष्ण अपन मन मे रुक्मिणी सँ विवाह करबाक निश्चय करैत छथि। दोसर दिश 'हरिदास' नामक एक दोसर भिक्षुक सँ श्रीकृष्णक

Scanned with CamScanner

रूप-लावण्य सुनि रुक्मिणी सेहो प्रण करैत छथि जे ओ कृष्णेटा सँ विवाह करतीह मुदा हुनक भाए रुक्मि अपन बहिन लेल शिशुपाल कें चुनैत छथि, ई वृत्तान्त श्रीकृष्ण कें ज्ञात भए जाइत छन्हि। ओ अबैत छथि आ विवाह सँ पूर्व भवानी पूजा करए जेलि रुक्मिणीक हरण कए लैत छथि। बाट मे आएल सभ राजा कें ओ एसकरे हराए रुक्मिणी कें द्वारका अनैत छथि। अन्त मे ब्रह्म विधि पुरस्सर दुनू गोटाक विवाह सम्पन्न करबैत छथि।

रुक्मिणीहरण नाटक विषयवस्तुक प्रसंग श्री अम्बिकानाथ बोरानक कथन बड़ आकर्षक अछि –

रुक्मिणीक गाथा स्वदेशप्रेमक विषय थिक कारण जे ई राजा भीष्मक बेटी छलीह आओर असम परम्परानुसार भीष्मक कुण्डिल ना सदियाक राजा छलाह। स्वतःप्रज्ञ आ तत्वदर्शी शंकरदेव वैष्णव धर्मक प्रचारक, रसात्मक सामग्री मे स्वदेशप्रेमक पुट देबाक विलक्षण तत्व एहि कथा सँ बहार कएलन्हि।[7]

वस्तुतः रुक्मिणीहरण नाट आसामक मैथिली वैष्णव नाटक मध्य सभ सँ अधिक लोकप्रिय भेल।

5. केलिगोपाल नाट –

एहि नाटक कथावस्तु श्रीमद्भागवतक दशम स्कन्ध पर आधारित अछि। एहि मे भगवान श्रीकृष्ण आ गोपी लोकनिक नाना रूपक रास-लीलाक वर्णन अछि। डॉ. विरिंचि कुमार 'बरुआ'क शब्द मे,

'गोपी लोकनिक दिन प्रतिदिनक आनन्द आओर शोक, कानब ओ हँसी पद्य ओ प्राचीन गद्य मे एहि नाट मे वर्णित अछि।[8]'

केलिगोपाल नाटक निम्न पद मे श्रीकृष्ण-गोपीक रास-क्रीड़ाक वर्णन द्रष्टव्य अछि –

यत गोपी तत मुरुति माधव
चलय लय लासे हासे।
यैचे हेममणि माझे माझे
मणि मरकत परकाशे॥
करइते नृत्य कंकणे झनकित
मंजिर रुण झुण रोले।
कह शंकर केलि हरिको हेरि
सुर रमणी पर भोले॥[9]

डॉ. लेखनाथ मिश्रक विचारें,

ई नाट क्रिया-कलापक संघर्ष सँ रहित विरह ओ परस्पर रास-क्रीड़ाक वर्णन सँ भरल अछि। तैं दृश्य-तत्व कें श्रव्य-तत्व दबने अछि।[10]

Scanned with CamScanner

5. पारिजातहरण नाट -

हमर दृष्टि मे पारिजातहरण नाटक प्रधान पात्र नारद छथि। एकर हेतु जे नारदे द्वारा सत्यभामा कें ज्ञात होइत छन्हि जे श्रीकृष्ण रुक्मिणी कें पारिजातक फूल देलन्हि। पुनः ओएह श्रीकृष्ण कें एकर सूचना दैत छथि जे कोनो कारणवशात् सत्यभामा विकल छथि। श्रीकृष्णक निकट पहुँचला पर सत्यभामा हुनका पारिजातक वृक्ष आनबाक लेल कहैत छथिन्ह। अन्त मे श्रीकृष्ण इन्द्रलोक जाए इन्द्र कें पराजित कए वलपुरस्सर पारिजातक वृक्षक हरण करैत छथि एवं सत्यभामा कें दैत छथि। एहि तरहें ई नाटक समाप्त होइत अछि।

शंकरदेवक प्रस्तुत नाट विकास आ अभिनय दुनू दृष्टि सँ उत्तम भेल अछि। एहि मे साहित्य ओ संगीतक संग अभिनेयता गुणक सुन्दर समावेश भेल अछि। डॉ. जयकान्त मिश्र सेहो ओहि समयक उत्तमोत्तम नाटक मे सँ एक नाटक एकरो मानैत छथि।

6. पत्नीप्रसाद नाट –

एहि नाटक विषयवस्तु श्रीमद्भागवतक दशम स्कन्ध मे वर्णित अछि। एक दिन श्रीकृष्ण अपन बालसखाक संग वन मे गोचारण कए रहल छलाह। सखा लोकनि बुभुक्षाशान्तिक लेल आग्रह कएलथिन्ह। लगहि मे ब्राह्मण लोकनि यज्ञ कए रहल छलाह। हुनका ओतए सँ भोजन अनबाक हेतु श्रीकृष्णक आदेशें सखालोकनि गेलाह परन्तु तिरस्कृत भए घुरि अएलाह। पुनः श्रीकृष्णक भक्तिप्रेम सँ आकृष्ट ब्राह्मणी लोकनि पतिक मना कएलो उत्तर विविध प्रकारक सुस्वादु भोजन लए हुनक समीप अएलीह आ सभ कें भोजन सँ तृप्त कएलन्हि। भगवान श्रीकृष्ण प्रसन्न भए ब्राह्मण पत्नी कें जीवनमुक्त कए दैत छथि। तखन ब्राह्मण लोकनि कें यथार्थ ज्ञान होइत छन्हि आ ओ सभ श्रीकृष्ण गुण-श्रवण कीर्त्तन करए लगैत छथि।

एहि तरहें पत्नीप्रसाद नाट मे नाटककार प्रेमाभक्तिक श्रेष्ठता देखओलन्हि अछि। डॉ. जयकान्त मिश्रक अनुसारें, पत्नीप्रसाद कोनो पूर्वक कथा पर आधारित नहि प्रतीत होइत अछि, एहि मे शुद्ध वैष्णव धर्मक प्रचारक लेल कथा गढ़ल दैक। ओ आगाँ लिखैत छथि –

एहि नाटक विषय अछि पतिक वर्जनक अवहेलना कए कृष्णक प्रति ब्राह्मणी लोकनिक प्रेम, एतद् द्वारा ई उदाहृत कएल गेल अछि जे परमानन्द प्राप्तिक हेतु यज्ञ निरर्थक थिक। .... ब्राह्मणी लोकनि पर प्रसन्न भए कृष्ण हुनका लोकनि कें देवगणक दर्शन कराए दैत छथिन्ह जे लाभ ब्राह्मण लोकनि केवल कर्मकाण्ड द्वारा प्राप्त कए सकैत छथि। एहि नाट मे ई सिद्धान्त प्रतिपादित कएल गेल अछि जे सायुज्य लाभ केवल भक्ति सँ भए सकैत अछि। ने यज्ञ सँ आ ने तन्त्र-मन्त्र सँ।"

7. भोजनव्यवहार नाट –

एहि नाटक कथा श्रीकृष्णक बाललीला सँ सम्बन्धित अछि। एहि मे श्रीकृष्णक अनुकम्पाक प्राप्तिक हेतु ब्रह्मा द्वारा गो-हरण वर्णित अछि। एकर महत्वक प्रसंग डॉ. लेखनाथ मिश्र अपन शोध-प्रबन्ध

Scanned with CamScanner

'मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास' मे लिखैत छथि-

एहि नाटक महत्व नाटकक दृष्टि सँ शून्य अछि किन्तु एकर सिद्ध महत्व एहि ल'क' भए जाइत अछि जे शंकरदेवक पदाति आसाम मे मैथिली नाटकक परम्परा विलुप्त नहि भए गेल तकर ई स्पष्ट प्रमाण अछि।[12]

8. भूमिलेटोवा नाट-

एहि नाटक कथानक श्रीमद्भागवत मे वर्णित श्रीकृष्णक बालचरित सँ सम्बन्धित अछि। श्रीकृष्ण नेनु चोरएबाक दोष सँ मुक्त होएबाक लेल यशोदाक समक्ष कनैत-कनैत भूमि पर औंघराए लगैत छथि। इएह एकर मुख्य कथावस्तु अछि।

9. अर्जुनभञ्जन नाट-

एहि नाटक कथावस्तु पौराणिक अछि। एहि मे श्रीमद्भागवतक ओ प्रसिद्ध कथानक अछि जाहि मे श्रीकृष्णक उलूखल-लीला एवं नारदक शाप सँ कुबेरक बालक नलकूबर तथा मणिग्रीव, जे यमलार्जुन वृक्ष भए गेल छलाह, श्रीकृष्णक स्पर्शमात्र सँ दिव्य रूप पओलन्हि आओर शाप सँ दुहूक उद्धार भए गेलन्हि। ई नाट प्राय: सौंसे गद्यमय अछि।

10. पिम्परागुचोवा नाट-

एहि नाट मे सेहो श्रीकृष्णक बाललीलाक वर्णन अछि। एक गोपीक घर मे नेनु चोरएबाक कथानक एहि नाटक मुख्य आधार अछि।

11. रासझुमुरा नाट-

रासझुमुरा नाटक कथावस्तु राधा-कृष्णक बीच भेल रास-क्रीड़ा सँ सम्बन्धित अछि। परस्पर अपूर्व क्रीड़ाक वर्णन सँ ई नाट समाप्त होइत अछि। नाटक निम्न पद मे दुनू गोटाक रास-लीलाक वर्णन द्रष्टव्य अछि-

घन-घन भुजदोहाँ मेलि आलिंगन
चुम्बन वचन मिलाय।
हरिको कण्ठे आलिंगि रहु राधा
नयन वचन विधाय॥
परमानन्द अनंग रस सागर
तथिभे मजि रहु माय।
हरि को परस रासे विघुरि रहत तनु
माधव दीन शुण पाय॥[13]

12. चोरधरा नाट-

चोरधरा नाटक कथावस्तु श्रीकृष्णक नेनु चोरी सँ सम्बन्धित अछि। एकर विषयवस्तु एहि तरहेँ अछि-' श्रीकृष्ण एक दिन एकटा गोपीक घर मे नेनु चोरएबाक लेल पैसलाह एवं चोरि करिते काल पकड़ल गेलाह। सभ

Scanned with CamScanner

गोपी मिलि श्रीकृष्ण कैं पकड़ि बाहर करलक। बाहर आबि श्रीकृष्ण अपन संगी लोकनि कैं सोर पाड़लन्हि। सभ संगी एकजुट भए हुनका गोपी सबहिक चंगुल सँ छोड़बैत छथि। पुन: श्रीकृष्ण नाच कए नेनु प्राप्त करैत छथि। अन्त मे यशोदा कैं सबटा वृत्तान्त ज्ञात होइत छन्हि, ओ गोपी सभ कैं गंजन करैत छथिन्ह आ पुत्रक देहक धूरि आँचर सँ झाड़ि, कोरा लए घर अनैत छथि एवं पंचामृत भोजन करबैत छथि।

ई नाट बड़ आह्लादक अछि। अपना कैं नेनु चोरी सँ बचएबाक हेतु बाल श्रीकृष्ण अपन सखा सभ कैं सोर पाड़ैत निम्न वाक्य कहैत छथि —

आहे सखी सब श्रीदाम, सुदाम, विशाल, ऋषभ, स्तोक, कृष्ण, सुबल अर्जुन तुहाँ सब सत्वरे आब। हामाक एकेश्वर देखिये चोर बलिये बहुत झुण्डो झगड़ा करइ है।[14]

13. कोटोरखेलोबा नाट —

एहि नाटक विषयवस्तु श्रीकृष्णक बाललीला सँ सम्बद्ध अछि। श्रीकृष्ण अपन सखा लोकनिक संग नाच कए गोपी सभ सँ नेनु प्राप्त करैत छथि। एहि तरहैं प्रस्तुत नाटक मुख्य कथा नेनुलीला अछि।

14. भूषणहेरोबा नाट —

एहि नाटक विषय सेहो श्रीकृष्णक बाललीला सँ सम्बन्धित अछि। यमुनातटक कदम्बतर सूतल श्रीकृष्णक आभूषण राधा चोराए कए यशोदा कैं दए अबैत छथिन्ह। ज्ञात भेला पर बालक कृष्ण मायक समीप जाए घोर निद्राक कारण कहैत छथि। एही कथावस्तु कैं लए एहि नाटक कलेवर ठाढ़ कएल गेल अछि।

15. जन्मयात्रा नाट —

जन्मयात्रा नाटक कथावस्तु कृष्णक जन्म-वृत्तांत सँ सम्बद्ध अछि। एहि मे हुनक जन्म सँ सम्बन्धित सम्पूर्ण घटनाक चित्रण अछि, यथा- दैत्य जन्य दुख भार सँ पीड़ित वसुमतिक ब्रह्मा सँ निवेदन देवता सभक संग विष्णुक आराधना मे जाएब, ओहि समय भूमिक भार उतारबा लेल कृष्ण रूप मे विष्णुक जन्म लेबाक आकाशवाणी, देवकी-वसुदेवक विवाह दुनू गोटाक घर जाइत काल निम्न आकाशवाणीक होएब,

याक लैचा पास बंश, शुनरे अज्ञान।
एहिक अष्टम पुत्रे, तोर लेबै प्राण॥[15]

कंस द्वारा देवकीक साती बालकक वध अन्त मे हुनक आठम गर्भ मे स्वयं भगवानक अवतीर्ण होएब, देवकी- वसुदेव द्वारा नवजात शिशु श्रीकृष्ण कैं गोकुल मे यशोदाक समीप लए जाएब आदि विस्तृत रूप सँ वर्णित अछि।

संक्षेप मे इएह कहब जे अंकिया नाट सभक विषयवस्तु पौराणिक ओ धार्मिक अछि।

Scanned with CamScanner

सन्दर्भ- संकेत

1. मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास : डॉ. लेखनाथ मिश्र, पृ- 284
2. तत्रैव, पृ- 285
3. तत्रैव
4. तत्रैव
5. तत्रैव, पृ- 286
6. मैथिली साहित्यक इतिहास : डॉ. जयकान्त मिश्र, पृ- 187
7. तत्रैव
8. मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास : डॉ. लेखनाथ मिश्र, पृ- 287
9. तत्रैव
10. तत्रैव
11. मैथिली साहित्यक इतिहास : डॉ. जयकान्त मिश्र पृ-188
12. मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास : डॉ. लेखनाथ मिश्र, पृ-29
13. तत्रैव, पृ- 293
14. तत्रैव
15. तत्रैव, पृ-295

Scanned with CamScanner